ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 3 अंक : 3 फरवरी-मार्च 2013 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

तिलक लगाने का प्रचलन क्यों?	डा. महेश पारासर	2
कैसे जाने सोने–चांदी का पाया	डा. रचना भारद्वाज	4
कन्या जातक क्षण में गुस्सा व क्षण में प्रसन्न हो जाते है।	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
लो आ गई महाशिवरात्रि करे शिव वंदन	श्रीमती कविता अगरवाल	6
!!होलिकोत्सव (होली)!!	पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
श्री सरस्वती पूजन पर्व बंसत पंचमी एक शुभ मुहूर्त्त	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	8
जीवन में अभाव ही अभाव राहु केतु का प्रभाव	पं. अजय दत्ता	9
पुराण	कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा	10
शिवरात्रि पर करें कालसर्पदोष की शान्ति	पं विष्णु पाराशर	11
अभिवादन की सर्वश्रेष्ठ परम्परा–चरण स्पर्श ही है	सुरेश अग्रवाल	11
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	12–13
दूर अन्देश	विजय शर्मा	14
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

तिलक लगाने का प्रचलन क्यों?

उल्लेखनीय है कि हमारे मस्तिष्क (ललाट) से ही तिलक, टीका, बिंदिया का संबंध इसलिए जोड़ा गया है कि सारे शरीर का संचालन कार्य वही करता है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने शिवनेत्र की जगह को ही पूजनीय माना है। पवित्र विचारों का उदय मस्तिष्क पर तिलक लगाने से होता है। ललाट के मध्य मानवशरीर का वह बिंदु, है, जिससे निरंतर चेतन अथवा अचेतन दोनों अवस्थाओं में विचारों का झरना प्रवाहित होता रहता है। इसी को आज्ञाचक्र भी कहते हैं।

प्रमस्तिष्क, मस्तिष्क का वह ऊपरी भाग है, जो मनुष्य को देवता अथवा, राक्षस, प्रकांड विद्वान अथवा मूर्ख बनाने की शक्ति रखता है हमारी दोनों भौवों के बीच सुषुम्ना, इड़ा और पिंगला नाड़ियों के ज्ञानंततुओं का केंद्र मस्तिष्क ही है, जो दिव्य नेत्र या तृतीय नेत्र के समान माना जाता है। इस पर तिलक लगाने आज्ञाचक्र जाग्रत होकर व्यक्ति की शक्ति को ऊर्ध्वगामी बनाता है, जिससे उसका ओज और तेज बढ़ता है। शरीरशास्त्र की दृष्टि से यह स्थान पीयूष ग्रंथि (पीनियल ग्लैंड) का है, जहां अमृत का वास होता है। इसका स्त्राव सोमरस के तुल्य माना गया है। ललाट पर नियमित रुप से तिलक लगाते रहने से शीतलता, तरावट एवं शांति का अनुभव होता है। मस्तिष्क के रसायनों सेराटोनिन व बीटाएंडोरफिन का स्त्राव संतुलित रहने से मनोभावों में सुधार आकर उदासी दूर होती है। सिर दर्द का पीड़ा नहीं सताती और मेधाशक्ति तेज होती है। मन निर्मल होकर हमें सत्पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है। विवेकशीलता बनी रहती है और आत्म विश्वास बढ़ता है।

आमतौर पर चंदन, कुंकुम, मृत्तिका व भस्म का तिलक लगाया जाता है। चंदन तिलक लगाने से पापों का नाश होता है, व्यक्ति संकटों से बचता है, उस पर लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहती है, ज्ञान तंतु संयमि व सक्रिय रहते हैं, मस्तिष्क को शीतलता और शांति मिलती है। कुंकुम में हल्दी का संयोजन होने से त्वचा को शुद्ध रखने में सहायता मिलती है। और मस्तिष्क के स्नायुओं का संयोजन प्राकृतिक रुप में हो जाता है। संक्रामक कीटाणुओं को नष्ट करने में शुद्ध मृत्तिका का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यज्ञ की भस्म का तिलक करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार तिलक लगाने से ग्रहों की शांति होती है। तंत्रशास्त्र में वशीकरण आदि के लिए भी तिलक लगाया जाता है।

धर्मशास्त्र के अनुसार ललाट पर तिलक या टीका धारण करना एक आवश्यक कार्य है, क्योंकि यह हिंदू संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। कोई भी धार्मिक आयोजन या संस्कार बिना तिलक के पूर्ण नहीं माना जाता। जन्म से लेकर मृत्युशय्या तक इसका प्रयोग किया जाता है। यों तो देवी देवताओं, योगियों, संतो, महात्माओं के मस्तक पर हमेशा तिलक लगा मिलता है, लेकिन आमलोगों में धार्मिक आयोजनों, पूजा, पाठ, संस्कारों के अवसरों पर तिलक लगाने का प्रचलन है।

भारतीय परंपरा के अनुसार तिलक लगाना सम्मान का सूचक भी माना जाता है। अतिथियों को तिलक लगाकर विदा करते हैं, शुभयात्रा पर जाते समय शुभकामनाएं प्रकट करने के लिए तिलक लगाने की प्रथा प्राचीनकाल से आ रही हैं ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा गया है–

स्नानं दानं तपो होमो देवतापितृकर्म च। तत्सर्व निष्फल यादि ललाटे तिलक विना।
ब्राह्मणास्तिलकं कृत्वा कुर्य्यात्संध्यान्तर्पणम्।। ब्रह्मवैवर्त पुराण/ब्राह्मपर्व 26

अर्थात् स्नान, होम, देव और पितृकर्म करते समय यदि तिलक न लगा हो, तो यह सब कार्य निष्फल हो जाते हैं। ब्राह्मण को चाहिए कि वह तिलक धारण करने के बाद ही संध्या, तर्पण आदि संपन्न करे।

महेश पारासर

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध कराये जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

अमृत वचन

वेदान्त आपसे नौकरी, धन्धा अथवा संसार नहीं छुड़ाता बल्कि उसमें जो आसक्ति है, उसे छुड़ाता है।

संसार का दुःख ठीक उसकी वासना के अनुपात में होता है। अधिक वासना ही अणिक दुःखों का कारण है।

पाठकों के पत्र

श्रृदेय गुरुजी, सादर चरणस्पर्श

आपकी पत्रिका भविष्य निर्णय धर्म व ज्योतिष के क्षेत्र की वह पत्रिका है जो दिन पर दिन अपनी जड़ें मजबूती के साथ जमा रही है। आपका लेख अत्यंत ज्ञानवर्धक था। सभी लेख बेहद रुचिकर व ज्ञानवर्धक होते हैं। गुरू जी सम्भव हो तो इस बार होली के ऊपर कुछ विशेष लेख व उपाय के बारे में वताऐं

सधन्यवाद

सुमित अरोडा, नई दिल्ली

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का गत अंक बहुत रोचक लगा। आपकी पत्रिका मार्ग दर्शक का कार्य करती है। पत्रिका के लेख अंधविश्वास को दूर करते हुए धर्म और आध्यात्म का रास्ता दिखाते हैं। पिछले कुल अंक तो ऐसे हैं जिन्हें बार–बार पढ़ने की इच्छा करती है। आपकी पत्रिाका के लिए शुभ विचार रखने वाली आपकी बेटी।

सुजाता वक्शी, करनाल

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– अपनी कुंडली भेज रहा हूँ, बेरोजगार हूँ रोजगार कब तक लगेगा वताने की अतिकृपा करें

उत्तर– वर्तमान में आपकी शनि की महादशा चल रही है। समय गोचरानुसार भी अनुकूल नही है। शनि की पूजा व दान करें। पक्षियों को दाना चुगायें।

अजयकान्त शर्मा, आगरा

प्रश्न– व्यापार सही नही चल रहा कृपया सही मार्गदर्शन करें? **अशोक जैन, ग्वालियर**

उत्तर– आपकी समस्या के समाधान के लिए ये उपाय करें–

1. रोजाना सूर्य भगवान् को ताबें के बर्तन से अर्घ दें।
2. व्यापार वृद्धि यंत्र अपने कार्यालय में स्थापित करें
3. पन्ना रत्न कनिष्ठा उगली में बुधवार को धारण करें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– हमने पाँच वर्ष पूर्व एक मकान खरीदा शुरू में सव कुछ ठीक रहा परन्तु अब सभी लोग बीमार रहते है, मुझे भी ढंग से नींद नही आती, कुछ लोग कहते हैं कि यह मकान ठीक नही है। मकान का नक्शा भेज रही हूँ। सही मार्गदर्शन करें।

कामनी बंसल, आगरा

समाधानः– वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान में ईशान कोण में बने हुए शौचालय ठीक नहीं है। आप इनको वहाँ से मध्य पश्चिम दिशा की ओर स्थानान्तिरत करें इसके अतिरिक्त आपके मकान के नैऋत्य कोण में जो स्थान खाली है वह काफी नीचा है उस क्षेत्र को ऊंचा करें तथा वहाँ सम्भव हो तो कमरा बनावायें आप बस इन दोनों कमियों को दूर करें। शीर्घ लाभ मिलेगा। यदि सम्भव हो तो रोजाना सुबह शाम गायत्री मंत्र की कैसिट घर मे बजाया करें।

समस्याः– हमारे परिवार में आपसी समवंध दिन प्रति दिन खराब होते जा रहे हैं। अपने मकान का कच्चा नक्शा हाथ से बना कर तथा अपने परिवार के सदस्यों की कुण्ड़ली प्रेषित कर रही हूँ। कारण व उपाय बतायें। **रेवती अग्रवाल, अलीगढ**

समाधानः– वास्तुशास्त्र के अनुसार आपका बेड़रूम आग्नेय कोण में स्थित है यह ठीक नही हैं। आप अपना बेड़रूम आग्नेय कोण से हटाकर नैऋत्य कोण में ले जायें अपने घर के शौचालय को मध्य पश्चिम या फिर उत्तर–पश्चिम में स्थानान्तरित करें। ईशान कोण में एक गणेश जी की मूर्ति की फिर तस्वीर लगायें तथा रसोई घर को नैऋत्य कोण से हटाकर तुरन्त आग्नेय कोण में ले जायें। इससे काफी राहत मिलेगी। जहाँ तक सवाल दोनों की कुण्ड़ली का है तो आप तुरन्त एक पन्ना धारण करें तथा अपने पति को एक गोमेद धारण करवायें। चमत्कारिक लाभ प्राप्त होगा। **पं. अजय दत्ता**

मो. 9319221203

कैसे जानें सोने-चांदी का पाया

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

अक्सर परिवार में, जब किसी भी बच्चे का जन्म होता हैं तो परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्नता होती है, साथ ही वे सभी यह जानने के लिए भी उत्सुक रहते हैं कि बच्चा परिवार के लिए शुभ है या अशुभ।

वैसे तो बच्चे का जन्म होना परिवार की वृद्धि द्योतक है किंतु फिर भी उसके जन्म से परिवार में शुभ–अशुभ घटनाएं आती हैं। इस व्यवस्था में भी, सबसे पहले उनका प्रश्न यही होता है कि बालक किस पाये में जन्मा हैं?

जन्म नक्षत्र के आधार पर तथा जन्म पत्रिका में, लग्न से चंद्रमा की भाव विशेष में स्थिति के आधार पर निर्णय किया जाता है कि बालक या बालिका का जन्म किस पाये में हुआ है।

मुख्य रुप से चार पाये माने जाते हैं–

1. चाँदी का पाया **2. ताँबें का पाया**
3. सोने का पाया **4. लोहे का पाया**

प्रत्येक पाये में जन्म होने का अलग–अलग फल होता है। सामान्य रुप से चाँदी व तांबे के पाये में जन्म होना अच्छा माना जाता है तथा सोने (सुवर्ण) व लोहे के पाये में जन्म होना अच्छा नहीं माना जाता। चाँदी का पाया सर्वश्रेष्ठ और लोहे का पाया सबसे अधम माना गया है।

बालक–बालिका का जन्म किस पाये में हुआ? यह निम्न प्रकार से आसानी से पता लग जाता है।

1, 6, 11वें भाव में हों तो सोने का पाया।

2, 5, 9वें भाव में हों तो चाँदी का पाया।

3, 7, 10वें भाव में हों तो सुवर्ण का पाया।

4, 8, 12वें भाव में हों तो लोहे का पाया।

इस प्रकार जन्मपत्रिका में चंद्रमा किस भाव में हैं, यह देखकर आसानी से कहा जा सकता है या जाना जा सकता है कि जातक ने किस पाये में जन्म लिया हैं

द्वितीय विधि–जन्म नक्षत्र के आधार पर भी पाया ज्ञात करने या देखने की परिपाटी प्रचलित है। इस विधि में नक्षत्र चक्र को चार भागों में विभाजित किया गया है। जिस जातक का जन्म नक्षत्र जिस भाग में आता है, उस भाग संबंधी पाये में जन्म माना जाता है। नक्षत्र चक्र में 27 नक्षत्र होते हैं।

चाँदी का पाया–यदि आर्द्रा से दस नक्षत्रों में अर्थात् आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा तथा स्वाति में से, किसी नक्षत्र में जन्म हो तो बालक चाँदी के पाये में जन्म लेता है।

ताँबे का पाया–यदि जन्म नक्षत्र विशाखा से नौ अर्थात् विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूषा, उषा, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा में से कोई एक जन्म नक्षत्र हो तो ताँबे के पाये में जन्म होता है।

सुवर्ण का पाया– यदि जन्म नक्षत्र पूभा., उभा, रेवती, अश्विनी, भरणी या कृत्तिका में से कोई एक हो तो सुवर्ण के पाये में जन्म होता है।

लोहे का पाया–यदि जन्म नक्षत्र रोहिणी या मृगशिरा हो तो लोहे के पाये में जन्म होता है।

किस पाये का क्या फल?

चाँदी का पाया–शिशु का जन्म चाँदी के पाये में हो तो परिवार के लिए अच्छा होता है, चाँदी के पाये में बाल सुखों में पलता है, अतः परिवार का आर्थिक स्तर बढ़ता है, सुख–संपन्नता बढ़ती है, परिवार का मान–सम्मान बढ़ता है, पिता की तरक्की होती है।

सोने का पाया–सोने का पाया अच्छा नहीं होता। सोने के पाये में जन्मा जातक, रोगी या शारीरिक रुप से कमजोर रहता है। संभवतः बचपन से दबाऐं शुरु हो जाती हैं, परिवार में धन की हानि या नुकसान होता है, पिता का शत्रुओं या प्रतिस्पर्धियों से विवाद या अन्यत्र बंधु–विवाद पनप सकते हैं। परिवार में अशांति या कलह हो जाती है।

ताँबे का पाया–ताँबे के पाये में बालक का जन्म होने पर पिता की आय बढ़ती है, उन्नति होती है, व्यापार की वृद्धि व परिवार की सुख–समृद्धि बढ़ती है। पिता का मान–सम्मान बढ़ता है।

लोहे का पाया–लोहे के पाये में जन्मा बालक परिवार को भारी रहता है। शिशु का स्वास्थ्य कमजोर रहता है, दूध या भोजन नहीं पच पाता। परिवार में कोई शोकप्रद घटना की संभावना रहती है, पिता को व्यापार में हानि होती है।

इस तरह यदि सोने या लोहे के पाये में बालक–बालिका जन्में तो शीघ्र ही निवारण करना चाहिए।

❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
भविष्य दर्शन®
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666
❋❋❋

कन्या लग्न - क्षण में गुस्सा व क्षण में प्रसन्न

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

कन्या का अर्थ तो नाम से ही कुछ स्पष्ट हो जाता । कन्या का अर्थ है सौम्य, सरल, धैर्यवान, भावुक, सुंदर बुद्धिमान व श्रृंगार पंसद। कन्या राशि एक द्विस्वभाव राशि है। द्विस्वभाव का अर्थ है ऐसे जातक के दो स्वभाव होते हैं कभी कुछ तो कभी कुछ यही कारण है कि यह अस्थिर प्रकृति के होते हैं। स्वभाव की यह स्थिरता इन्हें क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा, रुष्टा तुष्टा क्षणे क्षणे जैसी प्रकृति का बना देती है। यह एक क्षण में रुष्ट और दूसरे क्षण में प्रसन्न हो जाते है।

इस लग्न का स्वामी बुध है। कन्या लग्न उत्तरा फाल्गुनी के तीन चरण हस्त के चार चरण और चित्रा नक्षत्र के दो चरणों से मिलकर बनी है। यह शीर्षोदय राशि है और दक्षिण दिशा पर इसका अधिकार है। यह लग्न प्रकृति से सौम्य और राशि से स्त्री है। कन्या ही एक मात्र लग्न है जिसका स्वामी बुध अपनी ही राशि में उच्च का होता है। इन्हें रसीली मिठाई पंसद होती है। इस लग्न में एक खास बात यह होती है कि इसका स्वामी और इसके कर्मक्षेत्र का स्वामी एक ही होता है। दशम भाव अर्थात कर्मक्षेत्र के भाव में मिथुन राशि पड़ती है जिनसे कन्या और मिथुन दोनों घरों का स्वामी बुध बहुत ही शुभ फल देता है। यदि कुंडली में बुध उच्च का हो तो ऐसा जातक अतिबुद्धिमान होता है। स्त्रियों के लिए यह लग्न अच्छी मानी जाती है क्योंकि इसमें स्त्रियोंचित गुण अधिक होता है। इस लग्न वाली महिलाएं घर परिवार का पूरी तरह से ध्यान रखती हैं। बड़ो और अतिथियों का आदर सत्कार करने वाली होती है। अपने पति और परिवार को अपने गुणों से प्रसन्न रखती हैं। काल पुरुष की छठी राशि होने के कारण इन्हें रोग ऋण और शत्रु का भय बना रहता है। यह राशि पेट के रोग आदि तथा अनियमितताओं से संबंधित है। इस लग्न में जन्म लेने का अर्थ है बुद्धि की प्रखरता। ऐसे व्यक्तियों को विद्या के प्रति वास्तविक रुचि होती है। कन्या लग्न वालों को कुछ ग्रंथों में चालाक कहा गया है लेकिन व्यवहारिक रुप से देखा गया है कि ये अवसरवादी होते हैं और इनकी अवसरवादिता सबके सामने प्रकट हो जाती है। यह अपने लाभ के लिए ही जोड़ तोड़ में लगे रहते हैं। यह हमेशा ऐसी ही सलाह देते हैं जिनमें इनका फायदा हो।

इस लग्न में खास बात होती है कि यह भरण पोषण में बुहत माहिर होता है। स्त्री हो या पुरुष यह अतिथियों आदि को बहुत मन से भोजन कराते हैं। इनके अंदर भोजन की व्यवस्था संभालने की विलक्षण प्रतिमा होती है। इस लग्न वाले व्यक्ति को होटल मैनेजमेन्ट होटल या अन्य भोजन से संबंधित व्यवसाय में जाना चाहिये। इनकी प्लानिंग, वाणिज्य, डिजाइनिंग, प्रोग्रामिंग व लेखन आदि के कार्यो में रुचि होती है।

यह धन के प्रति बहुत कल्पनाशील होता है। इनकी भविष्य की योजना बहुत जबरदस्त होती है। यह अपने शत्रुओं को पहचानने में धोखा खा जाते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्ति बाहरी आवरण से ही अच्छा या बुरा का निर्धारण करते हैं। यह भीतर गहरे में नहीं जाते इस लग्न के जातकों को विभिन्न प्रकार की विद्याओं को अध्ययन करने का शौक होता है। इनमें उतवलापन अधिक होता है। इस उतावलेपन के कारण ये कभी–कभी गलत कदम भी उठा लेते हैं। इस उतावलेपन के कारण इन्हें बाद में अपने आप पर ही गुस्सा आता है। औश्र अपने ऊपर से बहुत

शेष पेज 18 **पर**.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

लो आ गई महाशिवरात्रि करे शिव वंदन

डा. कविता अग्रवाल
ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

महाशिवरात्रि का महापर्व 10 मार्च 2013 को आने वाला है, जब पूरा वातावरण शिवमय हो जाएगा। शिवरात्रि ही एकमात्र ऐसा पर्व है। जब भगवान भोलेनाथ अपने भक्तों का दिल खोलकर उद्वार करते है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार प्रतिप्रदा आदि 16 तिथियों के स्वामी देवता होते है। जिस तिथि का जो देवता होता है उस देवता का उस तिथि में व्रत पूजन करने से उसकी विशेष कृपा प्राप्त हो सकती है। चर्तुदशी तिथि के स्वामी स्वंय भगवान शिव है। इस तिथि को रात्रि में व्रत करने के कारण इस व्रत का नाम शिवरात्रि माना गया है। इसलिये कृष्ण पक्ष की चर्तुदशी को शिवरात्रि का व्रत होता है।

महाशिवरात्रि के बारे में यह बताया गया है कि जिस शिवरात्रि में त्रयोदशी चतुर्दशी के साथ–साथ अमावस्या सहित तीनो तिथियों का स्पर्श होता है, वह शिवरात्रि सबसे अधिक उत्तम प्रभावकारी, चमत्कारी होती है। शिवपुराण गरूड़ पुराण पद्म पुराण, स्कंद पुराण सभी में महाशिवरात्रि पर्व की महिमा का वर्णन मिलता है व कई तरह के वृत्तांत है। इसी दिन शिव–पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ था। इसी दिन शिव लिंग रूप में प्रकट हुऐ थे।

महाशिवरात्रि के पवित्र दिन शिवभक्त पूजा व उपवास करते है। शिवमंदिरो को आकर्षक भ्ध्यता से सजाया जाता है। भगवान शिव के विभिन्न रूपो की पूजा अर्चना की जाती है। विशेषतः विभिन्न प्रकार के पदार्थो से निर्मित लिंग की पूजा का विधान है।

शिवपूजा विधान–

1. इस दिन व्रत, साधना, अराधना, जाप, ध्यान का विशिष्ट महत्व है। वांछित मनोकामनाओं की पूर्ति, शाँति, सुख समृद्धि के लिये मन में व्रत आराधना का संकल्प लेकर काले तिल पानी में डालकर स्नान करने के वाद स्वच्छ वस्त्र धारण करे।

2. इसके पश्चात् पूर्व दिशा की ओर मुख करके किसी मंदिर या शान्त पूजास्थल में बैठे।

3. बैठने के लिये कुश का आसन या ऊन के आसन का प्रयोग करें।

4. अपने सामने लकडी की चौकी पर शिव परिवार का चित्र व शिवलिंग स्थापित करें। शिवलिंग में पारद शिवलिंग व स्फटिक शिवंलिग श्रेष्ठ है।

5. लिंग के साथ वेदी का होना आवश्यक है। वेदी महादेवी अर्थात् शक्ति का स्वरूप है, और लिंग मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपर शिवस्वरूप है। इसीकारण एक शिंवलिग की पूजा से सभी देवताओं की कृपा प्राप्त होती है।

6. गणपति पूजन के बाद शिवलिंग को पंचामृत से स्नान कराऐ उसके बाद कुंकुम या केसर का तिलक करे।

7. श्वेत पुष्प, धतुरे का पुष्प तथा उल्टा विल्व पत्र, नैवेध अर्पित करें। कुकुम से रंगे अक्षत धूप, दीप अगरवत्ती से पूजन करें। स्त्रियाँ साथ में माता पार्वती का श्रृंगार करे।

8. अब निम्न मंत्र को पढते हुए शिव का आहवान करे।

ऊँ पिनाक धृक इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ इह सन्नितधेहि, इह सन्निधेहि इह सन्निधत्सव यावत् पूजा करोम्यह।

स्थानीयं पशुपतये नमः। एतत् पाद्यै नमः शिवाय।।

या भक्ति भावना से 5 मिनट मन ही मन श्रद्धा से **ऊँ नमः शिवाय** का जाप करते हुऐ उनका आह्वान करे। शिव की अष्ट मूर्ति पूजा, गंध पुष्प द्वारा करें।

इसके पश्चात् शिव स्तुति, रूद्रपाठ, लघु रूद्राष्टाध्यायी पाठ कर सकते है। रूद्राक्ष की माला से 7 माला जाप उप्युक्त किसी भी मंत्र की करें।

ऊँ नमः शिवाय – यह सुख सौभाग्य प्रदान करने वाला मूल मंत्र है।

हीं ऊँ नमः शिवाय हीं– यह अष्टाक्षर शिव मंत्र शत्रु बाधा निवारण व भयनाशक मंत्र है।

महामृत्युंजय मंत्र

शेष पेज 17 पर...............

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा
डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

!!होलिकोत्सव (होली)!!

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

रंग डालों ऐसा डालो, जिससे एक उमर रंग जाये।
इन पानी वाले रंगों से क्या होता।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः तः।
ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।
अथवा
पुरुषस्य मुख ब्रह्म क्षत्रमेतस्य बाहवः।
ऊर्वोर्वैश्यो भगवतः पद्भ्यां शूद्रोऽभ्यजायत।।

विराट् पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जाँघों से वैश्य और पैरों से शूद्रों की उत्पत्ति हुई है। इनके नाम से ही वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की प्रधानता है और इनके चार ही मुख्य त्यौहार क्रमशः रक्षाबन्धन, दशहरा (विजयादशमी) दीपावली व होली है। चूँकि चारों वर्णो की उत्पत्ति विराट् के एक शरीर से है। प्रत्येक मानव के शरीर में चारों वर्ण निहित है अतः मूल रुप से यह कहना सर्वथा गलत होगा कि अमुक त्यौहार अमुक वर्ण से सम्बन्धित है। हाँ ऐसा सम्भव है कि अमुक वर्ण के लिए अमुक त्यौहार की विशेष प्रधानता हो। परन्तु सम्पूर्ण त्यौहारों में होली का त्यौहार सर्वश्रेष्ठ है। विचार कीजिए मकान में नींव (आधार) का ही महत्त्व है। उसी प्रकार शरीर रुपी घर के लिए पैर ही आधार हैं, स्तम्भ हैं। सब धर्मो की सिद्धि का मूल सेवा है, सेवा किए बिना कोई भी धर्म सिद्ध नहीं होता। अतः मूलभूत सेवा ही जिसका धर्म है, वह शूद्र सब वर्णो से महान् है। जब शूद्र सब वर्णो से महान् है तो फिर उसके लिए निर्धारित होली का त्यौहार भी सर्वश्रेष्ठ हो जाता है। ब्राह्मण का धर्म मोक्ष के लिए क्षत्रिय का धर्म, भोगने के लिए वैश्य का धर्म अर्थ के लिए और शूद्र का धर्म, धर्म के लिए है, अतः इसकी वृत्ति से ही भगवान् प्रसन्न हो जाते हैं। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने द्वारिका वासियों, व्रजवासियों, अपनी रानियों, पटरानियों व आल्हवादिनी शक्ति राधा के साथ होली का उत्सव मनाया है। स्वयं देवता भी इस आनन्द में पीछे नहीं रहे। भगवान् शंकर ने तो श्मशान् की राख से ही होली खेलकर अपने को कृतकृत्य किया। होली का पर्व फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। यह दो भागों में विभक्त है। पूर्णिमा को होली का पूजन व होलिका दहन तथा फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को रंग, गुलाल तथा कीचड़ आदि से होली होती है।

होली, होलिका दहन निर्णय
प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या पौरिर्णमा फाल्गुनी सदा।
तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे।।
इति नारद-वचनात् प्रदोषव्यापिनीत्युक्तम्।

सदा फाल्गुन मास की पौर्णिमा को प्रदोषव्यापिनी ग्रहण करें। उसमें भद्रा के मुख को त्यागकर निशामुख में होली का पूजन करे। इस नारद के वचन से प्रदोष व्यापिनी ग्रहण करें।

हेमाद्रौ मदन रत्ने च भविष्ये अस्यां निशागमे पार्थ संरक्ष्याः शिशवो ग्रहे। गोमयेनोपलिप्ते च सचतुष्के गृहांगणे। इत्यादिना तत्रैव तद्विधानाच्च। तेनेयं पूर्व विद्धा श्रावणी दुर्ग नवमी दूर्वा चैव हुताशनी। पूर्व विद्धैव कर्तव्या शिवरात्रिर्बलेर्दिनम्। इति बृहद्यमब्रह्मवैवर्तोक्तेश्च। दिनद्वये प्रदोष व्याप्तौ परैव।

हेमाद्रि तथा मदनरत्न में भी भविष्य पुराण का वचन है कि–हे पार्थ इस पूर्णिमा में रात्रि के आने पर गोमय से किए हुए चौकार गृहांगण (घर के चौक) में बालकों की रक्षा करे। इत्यादि से वहाँ पर उसका विधान कहा है। इससे यह पूर्व विद्धा (अर्थात्–पूर्व दिन ही प्रदोषकाल में प्राप्त होने पर) ग्रहण करे–श्रावणी, दुर्गानवमी, दुर्गाष्टमी, हुताशनी (होली), शिवरात्रि तथा बलिकादिन वे सब पूर्वा विद्धा ही करना चाहिए। हय बृहद्यम और ब्रह्मवैवर्त पुराण में कहा है। दोनों दिन प्रदोष काल में प्राप्त हो तो दूसरी ही ग्रहण करे। सायाह्ने होलिकां कुर्यात् पूर्वाह्ने क्रीडनं गवाम्–निर्णयामृत के अनुसार सायाह्न मे होलिका करे और पूर्वाह्न में गौओं की क्रीडा करे।

ज्योतिर्निबन्धे तु-प्रतिपद्मूतभद्रासु थाऽर्चिता होलिका दिवा।
संवत्सरं च तद्राष्ट्रं पुरं दहति साद्भुतम्।।

शेष पेज 19 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

श्री सरस्वती पूजन पर्व बंसत पंचमी एक शुभ मुहूर्त्त

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

लोक प्रसिद्ध मर्हुर्त्तो में बंसत पंचमी का पर्व आता है। इसे अनूपछा या अवूझ मुहूर्त की संज्ञा प्राप्त है। लोक व्यवहार की दृष्टि में इस मुहूर्त को स्वयम् सिद्ध माना जाता है। यह प्रत्येक शुभ कार्य में बड़ी ही श्रद्धा के साथ अपनाया जाता है। लोग बिना किसी अशुभ चिंतन किये, बिना किसी हिचक के बगैर पंचाग शुद्धि के इसे मान्यता देते है।

विवाह आदि समस्त मांगलिक कार्य बंसत पंचमी के दिन सम्पादित करना शुभ एंव सिद्धिप्रद होता है। चारों वर्णो के लोग तथा उनके पूर्वज इस मुहूर्त को बड़ी ही श्रद्धा और उंमग के साथ अपनाते आये है। और सफल भी होते देखे गये है। हिंदू धर्म परम्परा से जुड़े होने की वजह से इसका अति विशिष्ट महत्व है। यह सरस्वती पूजन का पर्व है। स्कंद पुराण के अनुसार श्री सरस्वती जी के मन्दिर में विद्या दान करना पुण्य का कार्य माना गया है। ऐसे मंदिरो में धर्मशास्त्र की पुस्तकों का दान किया जाता था।

विधालय वगैरह सरस्वती के मंदिर होते है। अगर लोग चाहें तो स्वेच्छा से ऐसे स्थलों पर जाकर लेखक पठन साम्रगी कागज, पैन पेन्सिल, कापी, किताव, वस्ता आदि को दान स्वरूप विघालयो के मध्य वितरण कर धर्म लाभ कमा सकते है। यदि यह शुभ कार्य सरस्वती पूजन के महान पर्व बसंत पंचमी के दिन इच्छूक पुण्यात्मा करेंगें तो उनके पुण्य को प्रभा और अधिक चमकने लगेगी।

सरस्वती–पूजन–पर्व के दिन शारदा देवी या सरस्वती देवी के मन्दिर में वीणा या सितार का दान करने से संगीतज्ञो को गायन वादन की कला में निपुणता हासिल होने लगती है। संगीत प्रेंमियों के अतिरिक्त अन्य पुण्यार्थी लोग सरस्वती जी के मन्दिर में सरस्वती कवच, सरस्वती सहस्रनाम स्तोत्र व सरस्वती चालीसा इत्यादि की पोथियों का वितरण कर सरस्वती जी के कृपापात्र वन सकते है।

न्याय जगत से जुड़े लोग यदि इस पर्व कें दिन सरस्वती जी के मन्दिर में चांदी का बना हंस ज्ञानदात्री सरस्वती को प्रसाद आदि के साथ भेंट करते है। दाहिने हाथ से किये गये ऐसे कर्म या पुरूणार्थ से सफलताऐं उन्हें बायें हाथ में रखी प्रतीत होने लगती हैं वे सरस्वती जी के कृपा पात्र वन जाते है। ऐसे लोगों को सतत् छह मास तक सरस्वती जी की पूजा अराधना च स्तुति पाठ करते हुए प्रसन्न रहना चाहिऐ। न्याय के क्षेत्र में यदि बंसत पंचमी के दिन असली प्राकृतिक मोतियों की माला सरस्वती को अलंकरण हेतु अर्पित की जायें तो उसके लिये विजय के द्वार खुल जाते है।

शिक्षा जगत से जुड़े लोग यदि सरस्वती जयंति के दिन यदि मंन्दिर में भगवती सरस्वती को श्वेत वस्त्रालंकार

धारण कराते है। तो उनके कार्य व्यवसाय से जुड़ी हर दिशा उनके लिये हितकारिणी बन जाती है। इस पावन पर्व पर सरस्वती जी को मुकुट छत्र और ध्वज भेंट करने से श्रेष्ठत्व की प्राप्ति होती है। अज्ञान अंधकार दूर होता है। माघ शुक्ल पंचमी को श्री पंचमी भी कहतें है।

बंसत पंचमी के दिन सरस्वती पूजन के अतिरिक्त कामदेव एंव रति का पूंजन करने से गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहता है। यह पर्व भगवान शंकर और पार्वती जी के पूजन अर्चन से भी जुडा है जगह जगह पर शिवालयों में मेले भी लगते हैं।

इस तरह से हम यह पाते है। कि देव कार्य मंगल कार्य इत्यादि प्रत्येक शुभ कार्यो के लिय बंसत पंचमी की तिथि अपने आप में अति विशिष्ट महत्व को संजोये रहती है।

माघ शुक्ल पंचमी को श्री पंचमी भी कहतें है। इस दिन विद्या बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती जी को जयन्ती मनाई जाती है। उत्तम विद्या और बुद्धि की कामना लेकर लोग उनका षोडशोपचार, दशोपचार अथवा मात्र पंचोपचार विधि से उपचार करते है। इस दिन पूर्वाभिमुख होकर श्वेत वस्त्र धारण कर निम्न मंत्र का दस माला जप करना चाहिऐ और दशांश हवन भी कारना चाहिए और कपूर से आरती करने के पश्चात् निम्न प्रार्थना भी करनी चाहिए।

प्रार्थना :- सरस्वती महामागे विद्ये कमललोचने।
विद्या रूपे विशालाक्षी विद्या देहि नमोस्तुते।।

विशेष– इस पर्व पर सिद्ध सरस्वती यंत्र का पूजन एंव सिद्ध सरस्वती यंत्र का लाकेट धारण करने से मां सरस्वती की विशेष कृपा प्राप्त होती है एंव व्यक्ति का वुद्धि विवेक सदैव जागृत रहता है। ❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

जीवन में अभाव ही अभाव
राहु केतु का प्रभाव

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

राहु लग्न में और केतु सप्तम में हो तो-ऐसी स्थिति में शारीरिक कष्ट, अपयश, स्त्री से अनबन, सिर में चोट, विषपान, चलते–चलते झगडे आदि होने की संभावना रहती है।

राहु धन स्थान में और केतु अष्टम में हो तो-इसमें चोरी, धन्य गमन, मुकदमे, धन का व्यय, भूत–प्रेतों से परेशानी, अकारण मृत्यु, गले, आंख, नाक, कान की बीमारियों आदि का भय रहता है।

राहु तृतीय में और केतु नवम में हो तो- भाई–बहन से झगड़ा, आलस्य, शरीर की शिथिलता, पिता से दूरी, हाथों में कष्ट आदि हो सकते हैं।

राहु चतुर्थ में और केतु दशम में हो तो-जमीन जायदाद के झगड़े, माता को कष्ट, पिता के घर छोड़ने, फेफडों के रोग आदि की संभावना रहती है।

राहु पंचम में और केतु एकादश में हो तो-संतान कष्ट, संतान से झगड़ा, परीक्षाओं में असफलता, सट्टे में हानि, आमदनी में कमी, उदर रोग आदि का भय रहता है।

राहु षष्ठ में और केतु द्वादश में-लंबी बीमारी, शत्रु से परेशानी, मुकदमा, धंधे की कमी, विदेश गमन से कष्ट, जेल यात्रा और गुर्दे, हर्निया, अपेंडिसाइटिस के रोग की संभावना रहती है।

राहु सप्तम में और केतु लग्न में:- स्त्री से झगड़ा, तलाक, गर्भपात, परस्त्री भोग एवं बदनामी, योनि तथा जननेन्द्रिय संबंधी रोग, व्यापार में तनाव आदि का भय रहता है।

राहु अष्टम में और केतु द्वितीय में:-भूत–प्रेतों से परेशानी, दुर्घटनाएं, विदेश गमन, स्त्री सुख का अभाव, धन हानि, पेशाब के रोग आदि हो सकते हैं।

राहु नवम में और केतु तृतीय में:- पिता को कष्ट, पिता से झगड़े, उनकी मृत्यु, तरक्की में बाधा, पद में गिरावट, समाज में निंदा, जंघा, पैर घुटने आदि के कष्ट की संभावना रहती है।

राहु दशम में और केतु चतुर्थ में-पिता से झगड़ा, उनका घर छोडना, कार्य हेतु विदेश गमन, राजनीति में विशेष झगड़े, निलंबित होना, हृदय, फेफडें आदि के रोग, काम धंधे की कमी आदि हो सकती है।

राहु एकादश में और केतु पंचम में-बड़े भाई से झगड़ा, आय में कमी, नौकरी में परेशानी, सभी तरह के नुकसान, संतान कष्ट, बाहु–भुजा कष्ट, बदनामी आदि का भय होता है।

राहु द्वादश में और केतु षष्ट में- मुकदमेंबाजी, जेल यात्रा, विदेश गमन, विदेश गमन, विशेष खर्च, मृत्यु, सुदामा जैसी निर्धनता, आंखों के कष्ट आदि की संभावना रहती है।

राहु यदि मिथुन, कन्या वृष या तुला राशि में हो, तो क्रुरता में कमी आती है। लेकिन यदि वह शत्रु क्षेत्री हो, अस्तगत हो, जैसे कर्क, सिंह मेष या वृश्चिक राशि में हो, तो क्रुरता में वृद्धि होती है। वह नीच का हो, जैसे धनु तथा मीन में हो अत्यंत विकराल हो जाता है।

राहु केतु द्वारा निर्मित कुछ विशेष योग-यदि किसी भी लग्न में राहु के साथ चन्द्र हो तो जातक भूत–प्रेत, ब्रह्मराक्षस और पिशाच बाधा से पीड़ित होता है। उसे अनिद्रा रोग घेरे रहता है। वह प्रायः दुखी, चिडचिड़ा, क्रोधी और विक्षिप्त हो जाता है। अपने जीवन से निराश रहता है। ऐसे जातकों को आत्महत्या करते पाया गया है।यदि सूर्य, बुध अथवा शुक्र के साथ राहु लग्न में हो तो अपने परिजनों और पडौसियों के साथ परस्पर लड़ाई–झगड़ा, कोर्ट–कचहरी, पुलिस–दावे, वादापवाद तथा मारपीट की घटनाएं होती है। यदि केतु के साथ भी उक्त योग हो तो कारक ग्रह यही फल देते है। इन्हीं कारणों से जातक दुःख पाता है तथा आर्थिक हानि उठाता है। कुल मिलाकर उसका जीवन कष्टमय रहता है।

अगर राहु पांचवे भाव में हो,कर्क या धनु लग्न हो, पांचवें भाव अथवा लग्न में मंगल–गुरु हो अर्थात् लग्न में कर्क या वृश्चिक, धनु या मेष राशि में मंगल–गुरु हो अथवा पंचम भाव पर बुध–मंगल

शेष पेज 18 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

पुराण

कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा
आगरा।

शास्त्रो ने पुराणों को पंचम वेद माना है, वेदों की ही सार बातें इसमें अत्यन्त रोचक ढंग से कथाओं के रूप में वर्णित है। शास्त्रानुसार वेदों के अध्ययन में सबका अधिकार नहीं है, केवल श्रेवर्णिकों के लिये ही यज्ञोपवीत संस्कार के पश्चात् गुरू मुख से इनको श्रवण तथा अध्ययन करने का विधान है, स्त्रीयों, शूर्दो एंव अन्य जाति के लोगों का वेदों के पठन–पाठन का अधिकार नही है, ऐसे लोगो को भी वैदिक सिद्धान्तों से परिचित कराने तथा उन्हें त्रिवर्ग की प्राप्ति के साथ–साथ मोक्ष प्राप्ति का भी सूलभ मार्ग दिखलाने के लिये पुराणों की रचना हुई है।

पुराणों में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार एंव निष्काम कर्म की महिमा के साथ यज्ञ, दान, तप तीर्थ, सेवन, देवपूजन, श्राद्ध–तर्पण आदि शास्त्रविहित शुभ कर्मो में जनसाधारण को प्रवृत्त करने के लिए लौकिक एंव परिलौकिक फलों का भी वर्णन किया गया। इसके अतिरिक्त पुराणों में अन्याय कई उपयोगी विषयों का भी समावेश हुआ है। पुराणों में प्रायः सभी अस्तिक तथा नास्तिक दर्शनों के सिद्धान्तो का सूत्र रूप से वर्णन मिलता है। विशेषकर सांख्य, योग एंव वेदान्त दर्शनों का तो श्रीमद् भागवत् आदि पुराणों में विशेष रूप से विवेचन किया गया है। पुराण भारतीय संस्कृत एंव सभ्यता के विश्वकोष है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी पुराणों का कम महत्व नही है। इतिहासों और पुराणों में इतना ही अन्तर है। कि पुराणों की दृष्टि बहुत अधिक व्यापक है, इनमें भूमण्डल का इतिहास ही नहीं अपितु इस भूमण्डल की कब ओर कैसे उत्पत्ति हुई है, अन्यलोकों की कब–कब किस प्रकार सृष्टि हुई है। इन सभी बातों का भी विस्तृत वर्णन है, इतना ही नही, सृष्टि कब और किस प्रकार होती है। तथा भविष्य में क्या होगा, इस पर भी पुराणों में पूर्ण रूप से प्रकाश डाला गया है। पुराणों में जीवन की गुत्थियों को बहुत ही रोचक और हद्रयग्राही ढंग से समझाया गया है। भगवान के निर्गुण निराकर, सुगण–साकार आदि विविध रूपों में से किसी भी एक रूप को लक्ष्य वनाकर उसकी ओर अग्रसर होने का सुगम मार्ग दिखलाया गया है। पुराणों की महत्ता का प्रधान कारण यही है। पुराणों का पाठ करके तथा उनके उपदेशो का जीवन में उतारने का अथक प्रयत्न करने ने जाने कितने मनुष्यों ने अपने जीवन को सार्थक बनाया है, ओर आगे भी बनातें रहेंगें।

पुराणों की रचनायें ब्रह्मा जी के आशीर्वाद से वेदव्यास जी द्वारा की गयी हैं। जब ब्रह्मा जी ने वेदव्यास जी के पुराणों उपपुराणों बम्हसूत्र आदि की रचनाएँ करने के लिए आशीर्वाद दिया तो व्यास जी ने ब्रह्मा जी से अनुरोध किया कि पितामह आपके आदेश अनुसार और कृपा से मैं इस की रचनाए तो करूंगा परन्तु लेखन का कार्य के लिये आप किसी को नियुक्त करे, क्योकि मैं ध्यान में बैठूगां, तो सह पन्तिबन्ध कैसे हो पाएंगें। ब्रम्हा जी ने श्री गणेश जी को इस कार्य के लिये आज्ञा दी। श्री गणेश जी ने ब्रह्मा जी के आदेश सिरोधार्य किया, परन्तु उनके सम्मुख एक शर्त रख दी कि पंक्तिबद्ध तभी करूंगा, जब बिना रूके हुए लगातार बोला जाये वेदव्यास जी महराज ध्यान मग्न होकर लगातार बिना रूके कहते गये, और श्री गणेश जी ने पक्तिबद्ध किया। वद्राकरण में आज भी व्यास जी पुराणों की रचना करते हुए तथा गणेश जी को पंक्तिबद्ध करते हुए विशाल मंन्दिर में प्रमिमाए स्थित है।

पुराण की व्याख्या महापुरूषों से निम्न प्रकार से की है। पुराण का अर्थ हे, पुरातन, प्राचीन, यह अनादि होते हुए भी पौरूषेय है।

'पुरा अपि नंव पुराण्य' पुराना होने पर भी जो नवीन हों।

''पुराणमाख्यानं पुराणम'' जिसमें प्राचीन आख्या हो, वह पुराण।

"यस्मांत पुरा हयनवींद पुराण" जो पूर्व में भी संजीव था और अब भी है।

स्मृतियों में कहा गाा है कि धर्म पुराणों में प्रतिपादति है।

पुराणों के पाँव लक्षण बतलाये गये हैंः–

सर्गश्च प्रति सर्गश्च, वंशो मनवन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पच्चलक्षणम।। (देवी भागवत 1/2/8)

पुराण वेदार्थ के बोधक हैं, पुराणें में वेदों की व्याख्या विधि कथा दृष्टान्तो द्वारा की गयी है, तथा पुराणों के ज्ञान **बिना वेदों का ज्ञान पूर्णरुपेश नहीं हो सकता।**

"वेदा प्रतिष्ठिता ःसर्वे पुराणेष्छेद सर्वदा" (नारद 3820/98)

अतः वेद पुराणों में ही प्रतिष्ठित है।

पुराणों के पठन एवं श्रृवण से सभी पाप नष्ट हो जाते है, अधर्म का ज्ञान होता है, सदाचार में प्रवृत्ति होती है, एवं

शेष पेज 16 पर.....

शिवरात्रि पर करें कालसर्प ण्दोष की शान्ति

पं विष्णु पाराशर
ज्योतिष शास्त्राचार्य

कालसर्प योग– कालसर्प में काल का अर्थ है **'समय'** और सर्प का अर्थ है **'विषधर'** होता है अर्थात् ऐसी कालावधि जो विष से युक्त हो।

राहु केतु मध्ये सप्तो विघ्ना, हा कालसर्प सारिका:।
सुतथासादि सकलदोषा, रोगेन प्रवासे चरणं ध्रुवम्।।

अर्थात् राहु केतु के मध्य समस्त ग्रहों के आ जाने से कालसर्प नाम का योग निर्मित होता है, जातक के जीवन में अनेक कठिनाईयाँ आती है। अर्थात् जातक के जीवन में इतनी विषमतायें होती है कि जातक का अपना जीवन काल सर्पदंश से ग्रसित ही लगने लगता है। परंतु कालसर्प दोष का निवारण संभव है। क्योकि महादेव सर्पो के इष्टदेव है, तथा सर्पो का राजा वासुकि उनके कंठ में विराजमान रहता है। अतः शिव अराधना करने से इस सर्पदोष से मुक्ति मिलती है।

इस वर्ष 10 मार्च 2013 को शिवरात्रि का पावन पर्व है, इस वर्ष पर शिव पूजा सर्प पूजा आदि करने से विशेष लाभ की अनुभूति होती है।

अतः इस योग में ग्रसित लोगों के लिए शिवरात्रि पर नागमाता मंदिर पर ''कालसर्प दोष शांति'' का आयोजन किया जा रहा है। अतः जिस किसी को भी जन्मपत्रिका में सूर्य ग्रहण, चंद्रग्रहण, चाण्डालयोग, सर्पयोग या सर्पनक्षत्र व सर्पयोगी में उत्पन्न हुआ हो वह जातक इस पूजा को करा कर लाभ की अनुभूति कर सकता है।

जन्मपत्रिका में कालसर्प दोष का अशुभ प्रभाव निम्न परिस्थितियों मं अधिक होता है।

1. राहु की महादशा या अर्न्तदशा काल में जातक को राहु की भावस्थ राशि एंव भाव के अनुसार अशुभ फल तीव्र होगा।
2. राहु अधिष्ठित राशि या राहु के नक्षत्रपति की दशान्तर्दशा

शेष पेज 19 पर.....

अभिवादन की सर्वश्रेष्ठ परम्परा–चरण स्पर्श ही है

सुरेश अग्रवाल
आगरा

मुस्कुराकर भाव से अभिवादन करना भारत की प्राचीनतम शिष्टाचार परम्परा है, जिस पर प्रत्येक भारतीय को गर्व है। इस परम्परा को हमारे ऋषियों, मुनियों तथा सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त है। अभिवादान से आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है। हाथ जोडकर नमस्कार करना, झुककर प्रणाम करना, उनकी आज्ञा मानना, चरण स्पर्श करना, सम्मान में खडे होना, समर्थन करना, सेवा करना, कदाचित सामने आने पर उनकी मार्ग देना, भीड में उन्हें देखने पर निकट जाना, समय मिलने पर उनके गुणों का बरवान करना, उनकी अनुपस्थिति में स्मरण करना, आदर सूचक व्यवहार अभिवादन के ही अंग है। अभिवादन से नई और पुरानी पीढी के मध्य संवाद हीनता भी समाप्त होती है। अभिवादन की मुद्रा बिना कहे ही आपके मनोभावों को प्रकट करने में सक्षम है–जैसा अभिवादन होगा, वैसा ही प्रतिउत्तर होगा।

सनातन धर्म में प्रातः उठने से लेकर शयन से पूर्व तक की क्रिया में अभिवादन का ही उल्लेख है। प्रातः कर दर्शन तथा भूमिवन्दन से लेकर रात्रि में परमात्मा की प्रार्थना तक सब में अभिवादन और आभार का ही भाव रहता है। भारतीय संस्कृति में किसी भी कार्य का प्रारम्भ करने से पूर्व अपने इष्टदेव तथा बड़े बुजुर्गो का आशीर्वाद लेना मंगलकारी होता है, जिससे हमें आत्मशक्ति होती है। लक्ष्य प्राप्ति के बाद उनके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करना आवश्यक है।

अभिवादन की श्रेष्ठतम् पद्धति चरण स्पर्श करना है। यह हमारी संस्कृति की शास्त्र सम्मत परम्परा है। ऐसी परम्परा अन्य संस्कृतियों में नही पायी जाती है। बड़ों के चरण स्पर्श करने से हमारा पुण्य बढ़ता है, सौभाग्य की प्राप्ति होती है,

शेष पेज 17 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

16 फरवरी - 15 मार्च

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस मास में स्वास्थ्य खराब होने का भय रहेगा। पत्नि से शुभ फलों की प्राप्ति होगी। कार्य मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– पत्नि सुख से लाभ होगा। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानिया खत्म नहीं होगी। भाईयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से बचें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– कारोबार में लाभ हाने की स्थिति बनेगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। पत्नि सुख से लाभ होगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। विवादों से दूर रहें। नई योजनाओ से हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। भाइयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में हानि होने का भय लगा रहने की संभावना रहेगी। नई योजनाओं से लाभ की प्राप्ति होगी। नेत्र रोग से ग्रस्त रहने की संभावना रहेगी। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। मानसिक तनाव से बचें।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। नेत्र रोग से ग्रस्त रहने की संभावना रहेगी। पत्नि से शुभ फलों की प्राप्ति होगी। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कार्य मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– धन हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। पत्नि से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आय से ज्यादा व्यय करेंगे।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में अर्थ हानि होने का भय रहेगा। नेत्र रोग भी सभंव हैं। मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेगें। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कारोबार से लाभ होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। आय से व्यय अधिक होगें। शत्रु पक्ष प्रबल होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मित्रों से मेल बढ़ेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। माह में क्रोध में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। नई योजनाओं से लाभ होगा। सम्पत्ति संबंधि त विवाद होना भी संभव हैं। नेत्र रोग भी सभंव हैं।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- मास के अन्त में हानि होने की संभावना रहेगी। नई योजनायें बनायेंगे। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। अपमान होने का भय रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

फरवरी	मार्च
16 दारिद्रहरण षष्ठी **17** आरोग्य सप्तमी, शिवाजी जं. **18** भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी **21** जया एका. व्रत **22** भीष्म द्वादशी **23** प्रदोष व्रत **25** पूर्णिमा स्नान समाप्त, संत रविदास जं. **28** डॉ. राजेन्द्रप्रसाद पु. ति.	**1** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **5** सीताष्टमी (जानकी जं.) **6** श्री राम दास जं., **7** स्वामी दयानन्द सरस्वती जं. **8** विजया एका. व्रत, विश्व महिला दिवस **10** महाशिव रात्रि व्रत **11** फाल्गुनि अमावस्या **13** फुलैरा दौज, श्री रामकृष्ण परम हंस जं. **15** श्री विनायक चतुर्थी व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त
फरवरी–20, 23
मार्च– 13, 14
गृह प्रवेश मुहूर्त
फरवरी– 20, 23
मार्च–13, 14
दुकान शुरू करने का मुहूर्त
फरवरी– 20, 22, 23 मार्च – 13, 14
नामकरण संस्कार मुहूर्त
फरवरी– 20, 27, 28 **मार्च** – 4, 8, 11, 13, 14

सर्वार्थ सिद्ध योग

फरवरी	मार्च
19 ता. सू.उ. से 23:14 तक	05 ता. सू.उ. से 23:48 तक
20 ता. सू.उ. से 23:35 तक	06 ता. सू.उ. से 22:49 तक
26 ता. 7:58 से सू.उ. तक	
28 ता. 4:03 से सू.उ. तक	
29 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	

16 मार्च - 15 अप्रैल

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- प्रियजनों का पूर्ण सूख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति का लाभ होने की संभावना रहेगी। प्रियजन को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई योजनायें बनाने में सक्षम रहेंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में लाभ होने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे। मानसिक तनाव से बचें। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। प्रियजनों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। योजनाओं से लाभ होगा। व्यवसाय मास के अन्त में ठीक हो जायेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष से सुख की प्राप्ति होगी। कार्य में निरन्तर हानि होने की संभावना रहेगी। अच्छे लोगों से मेल-जोल बढ़ेंगे स्वास्थ्य खराब रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में लाभ होकर हानि का भय रहेगा। प्रियजन का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में हानि होने का भय रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में गुप्त शत्रु से बचें। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। अपमान होने का भय रहेगा। मास के अन्त में खर्चें अधिक होंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। मास के अन्त में कारोबार ठीक हो जायेगा। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मन-मुटाव होने की स्थिति बनेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची-इस मास में धन लांभ होने की संभावना रहेगी। इस मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। मास के अन्त में स्वास्थ्य खराब रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मार्च	अप्रैल
20 होलिकाष्टक प्रारम्भ, दुर्गाष्टमी **23** आंवला एकादशी व्रत **24** गोविन्द द्वादशी, प्रदोष व्रत **26** पूर्णिमा व्रत, पूर्णिमा होलिका दहन **27** धुलैड़ी (बसंत उत्सव)	**1** एक नाथ षष्ठी, मूर्ख दि.,विश्व स्वास्थ्य दि. **2** भानु सप्तमी पूजन **3** शीतलाष्टमी पूजन, बासौड़ा (ठंडा वासी भोजन) **6** पापमोचनी एकादशी व्रत **7** प्रदोष व्रत **10** अमावस्या,**11** नवरात्र प्रारम्भ (प्रतिपदा) **12** द्वितीय नवरात्र **13** तृतीय नवरात्र गणगौर व्रत **14** चतुर्थ नवरात्र , डॉ. भीमराव अम्बेडकर जं. **15** श्री पंचमी

ग्रहारम्भ मुहूर्त
मार्च– नही है। अप्रैल – नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त
मार्च–नही है। अप्रैल – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
मार्च–22, 23, 27, 28
अप्रैल– नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त
मार्च– 22, 27, 29
अप्रैल–5, 10,

सर्वार्थ सिद्ध योग

मार्च	अप्रैल
23 ता. 12:33 से सू.उ. तक	11 ता. सू.उ. से 23:05 तक 15 ता. सू.उ. से 29:45 तक

दूर अन्देश
(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

''दूर अन्देश (दूरदर्शी) मुसीबत के समय सुखी रहता है।''

कछुए ने कथा सुनानी आरम्भ की–

बहुत समय पहले इसी सरोवर में तीन मछलियां रहती थीं– अनागत विधाता नामक मछली –जो आपत्ति आने से पूर्व ही निराकरण करती थीं, प्रत्युत्पन्नमति जो समय देखकर कार्य करती थीं और यद्भविष्य जो होगा, इस वाक्य का अनुसरण करती थी।

एक दिन आज की तरह कई मछेरे आए और खड़े होकर विचार करने लगे कि कल आकर यहां मछलियां पकड़ेंगे।

मछेरों की बात सुनकर अनागत विधाता नामक मछली किसी प्रकार दूसरे सरोवर में चली गई और अपने प्राण बचाए।

मछेरों की बात सुनकर प्रत्यत्पन्नमति नामक मछली ने विचार किया–''कल कोई निश्चित तो है नही कि, मछेरे कल अवश्य आयेंगें। अतः सरोवर नहीं छोड़ना चाहिए। समय पर जैसा उचित होगा, कर लेंगे।''

साथी मछली यद्भविष्य से बोली, ''बुद्धिमान वही है। जो आई हुई आपत्ति का उपाय करे, जैसे कि वनिय की स्त्री ने अपने प्रेमी को भेद खुल जाने पर बचा लिया था।''

यह सुनकर प्रत्युत्पन्नमति बोली, ''यद्भविष्य यह कैसी कथा है। मुझे इस कथा को कथा को अवश्य सुनाओ, क्योकि इसमें प्रेमी का उल्लेख है। और मैं प्रेमियो को प्रेम करते देखकर या उनकी बातें सुनकर बड़ी प्रसन्न होती हूं। इसका कारण मेरा प्रेम है।''

''क्या तुझे भी किसी से प्रेम हो गया था।'' यद्भविष्य जल्दी से बोली

''हा, मुझे भी एक से प्रेम हो गया था। मुझे भी रात–दिन एक ऐसे प्रेमी की सूझी रहती थी जोकि अब इस संसार में नही है। इसलिए मैं प्रेमियों को बात अवश्य ध्यान देकर सुनती हूं।''

''अच्छा तू अब यह कथा सुन–।'' प्रत्युत्पन्नमति ने कहा।

संकट

''संकट के समय जो उपाय करता है वह बुद्धिमान होता है।''

प्रत्युत्पन्नमति ने कथा सुनानी आरम्भ की –

प्राचीन काल में विक्रमपुर नगर में समुद्र दत्त नाम का एक बनिया रहता था। वह बड़ा दीन–धर्म को मानने वाला और धर्मार्थ था। नौकरों आदि को वह कभी सताता नही था और न ही उनसे अधिक काम लिया करता था।

उसकी पत्नी रत्नप्रथा–जैसा कि नाम से ही पता चल जाता है कि वह कितनी सुन्दर होगी–वाकई वह अपने नाम की तरह एक रत्न के समान सुन्दर, सुशील और गोरे रंग की स्त्री थी, परन्तु समुद्र दत्त अपनी पत्नी की आयु से बड़ा था वह उसकी इच्छापूर्ति में भी कुछ असमर्थ था।

वह रत्नप्रभा को दिलोजान से चाहता था, लेकिन इस चाहत कर रत्नप्रभा को जरूर नहीं थी। वह जवान थीं। उसका यौवन भरा–पूरा था जोकि समुद्र दत्त से नहीं दाब मान रहा था।

शादी से कुछ दिन बाद तक तो रत्नप्रभा एक नई नवेली वधु की तरह घर में रही और समुद्र दत्त भी, क्योकि अभी शादी करके लाया था और खा–पीकर वहू की चापलूसी में लगा रहता था, परन्तु रत्नप्रभा को उससे कभी वह सुख प्राप्त नही हुआ था जोकि वह चाहती थी।

बनिए समुद्र दत्त की पंसारी की दुकान थी। वह सुबह सवेरे अपनी दुकान पर चला जाता था और रात गये वापस लौटता था। पत्नी अकेले सारा दिन घर में रहा करती थी।

समुद्र दत्त के कई नौकर थे जिनमें से कुछ तो दुकान पर काम करते थे और कुछ उसके घर का काम–काज देखा करते थे।

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

रत्नप्रभा की अपने एक नौकर पर निगाह पडी जो नौजबान था–उसका मन उस पर विचलित हो गया। वह उसे प्राप्त करने का सोचने लगी।

एक दिन रत्नप्रभा ने नौकर को बुलाया और उससे कहा, तुम हमारे घर के क्या हो'' नौकर झिझकते हुए बोला ''मालकिन आप ये क्या बात कह रही हैं। मैं तो आपके घर का नौकर हूं, मैं और क्या हो सकता हूं''

'' अच्छा'! तो तुम हमारे घर के नौकर हो।'' रत्नप्रभा ने कहा।

''जी मालकिन।'' नौकर ने उत्तर दिया।

'' तब तो तुम हमारा हर काम करोगें।'' रत्नप्रभा बोली।

''क्यूं नही, मालकिन ! नौकर का काम तो मालिक की आज्ञा मानना ही होता है। आप जैसी आज्ञा देंगी मैं वैसा ही करूंगा।'' नौकर ने जबाव दिया और वह चला गया।

रत्नप्रभा उसे आजमा रही थी कि कहीं वह उसका राज किसी से न वता दे– उसने सोचा था कि हर चमकने वाली चीज सोना नही हो सकती, यही सोचकर पहले उसने अपने नौकर की परीक्षा लेने का इरादा किया।

उसने उस रात नौकर के ही सपने देखे और अगले दिन नौकर को फिर बुलाया–इस बार रत्नप्रभा ने उसे अपने कमरे में बुलाया था।

वह बोली–''कल तुम हमसे बिना बताये चले गये थे। इसकी तुम्हें सजा मिलेगी।''

नौकर चौंककर बोला, मालकिन! मैं तो अपने समय पर घर गया था–शाम को मैंने गाय का दूध निकाला और रसोई में रखकर तथा गाय को उसका चारा देकर मैं अपने घर गया था। यही मेरा घर जाने का समय होता है।"

"कितने बच्चे हैं तुम्हारे?" रत्नप्रभा यह देखना चाहती थी कि कहीं यह विवाहित तो नहीं है। यदि विवाहित है तो मेरे किस काम का। मुझे तो कोई कुंवारा लड़का चाहिए। जो मेरे अरमानों को समझकर उन्हें पूरा कर सकें।

नौकर चौंकर बोला, "मालकिन–यह आप क्या कह रही हैं? अभी तो मेरी शादी भी नहीं हुई–फिर बच्चे कहां से आ जाएंगे!"

रत्नप्रभा के मन में फूल खिले औश्र वह उसे अपने चक्कर में फांसने का प्रयास करने लगी।

उसने नौकर से कहा, "तुम हमारे नौकर हो, जो हम कहेंगे तुम्हे वही करना होगा।"

"जी मालकिन! यह बात तो मैं स्वयं आपसे कल कह चुका हूं।" नौकर ने याद दिलाने की कोशिश की।

मगर रत्नप्रभा तो उससे अपनी बात पक्की करके ही अपनी गाड़ी आगे बढाना चाहती थी। उसने कहा, "अच्छा! तुम हमारी बाल्टी भरो और गुसलखाने में रख दो, हम स्नान करना चाहिते हैं।"

नौकर ने बाल्टी भरनी शुरु की। नल घर के भीतर ही था।

रत्नप्रभा ने अपने कपड़े उसके पास नल पर जाकर उतारने शुरु कर दिये।

पहले उसने अपनी साडी सिर से उतारी और इधर–उधर की बातें करने लगीं।

नौकर अपनी नीची निगाह किये नल चलाता रहा। उसने अपनी गर्दन भी नहीं उठाई थी। वह डरता था और शर्माता बहुत था। नहीं चाहता था कि उससे कोई गुस्ताखी हो जो उसकी नौकरी छूटने का कारण बने। वह नहीं जानता था कि रत्नप्रभा उसकी मालकिन उससे क्या चाहती थी?

बाल्टी भर जाने के बाद नौकर ने बाल्टी उठानी चाही तो रत्नप्रभा ने उसे पीछे से हल्का धक्का मारा और फिर उसे उठाने लगी। उठाते समय उसकी साड़ी पूरी तरह खुल चुकी थी। जब वह उसे उठा रही थी तब उसने अपने वक्षस्थल का अधिक सहारा लिया था जोकि नौकर की पीठ पर जा लगे थे।

नौकर के शरीर में सनसनाइट–सी मचने लगी।

"अरे! तुम तो गिर गये। मैं तो सोच रही थी कि तुम बहुत ताकतबर होंगे, मगर तुम तो बड़े कमजोर हो। मेरे एक ढूंगे का झटका भी नहीं सम्भाल पाये।" रत्नप्रभा हँसकर कह रही थी।

नौकर से रहा नहीं गया। उसने तुरन्त जवाब दिया, "मालिकिन, आपने तो पीछे से वार किया था–किसी दिन आप आगे से वार करके देखना तो पता चलेगा कि मैं कितना कमजोर हूं।"

"अच्छा! ये बात है।" रत्नप्रभा तो यही चाहती थी कि नौकर उससे कुछ खुलकर बात करे–उसने तुरन्त अपने हाथ उसकी ओर धक्का देने के लिए बढ़ाये–"तो ले सम्भल।"

जैसे ही रत्नप्रभा ने अपने हाथ बढ़ाये, तो नौकर ने उसकी दोनों कलाइयां अपने मजबूत हाथों में थाम लीं और बस उन्हें पकडे ही खडा रहा।

कुछ देर तक जब वह कुछ न कर सकता तो रत्नप्रभा ने ही अपनी कलाई उसके हाथ से छुडाने की कोशिश की। वह चाह भी नहीं रही थी कि अपनी कलाई उसके हाथ से छुडाए–क्योंकि वह भी तो कुछ नहीं कर रहा था–इसलिए उसने ही अपनी कलाईयों को उसकी मुट्ठियों में इस प्रकार घुमाना शुरु किया वह उसके हाथों को अच्छी तरह से स्पर्श कर लें।

तभी उसका पति आ गया और उन्हें घूरने लगा।

रत्नप्रभा तो तुरन्त अपने पति के पास जाकर कहा, "प्राणनाथ! इस नौकर को बहुत बुरी आदत पड़ गयी है। यह कर्पूर चुराकर खा जाता है। यह मैंने इसका मुंह सूंघकर जान लिया है।"

वह अपने पति को बहकाने लगी–उसने सोचा अब तक तो इसने देखा नहीं था, मगर अब इसे हमें देख लिया है, न जाने बनिए महाराज मुझे इस करनी की क्या सजा दें–वह घबराई–मगर साहस बटोरती हुई अपने पति की बांहों में जाकर उसे उस समय आनन्दित करने के उद्देश्य से, उसकी आंखो में धूल झोंकने के इरादे से, अपने कुलक्षण को छुपाने के कारण मीठी–मीठी बातें बनाने लगी।

पति भी उसकी बातों को सच मानकर नौकर पर पलट गया। उसने कहा, "क्यों रे! तू कर्पूर चुराकर खाता है? बेशर्म, तुझे शर्म नहीं आयी चोरी करते हुए, जबकि हमने अपने नौकरों को पूरी छूट

दे रखी है–मनचाहा कुछ भी खा सकते हैं, मगर तूने चोरी करके क्यों खाया?" नौकर बौखला गया, परन्तु वह हिम्मत नहीं हारा था। वह रत्नप्रभा का आरोप सुन चुका था तथा उसने उसका उत्तर भी सोच लिया था। जानता था कि जरुर उससे भी कोई न कोई सवाल पूछा जाएगा और उसे उसकी सफाई देनी पडेगी।

वह अपने मन में उत्तर सोच ही रहा था कि बनिए ने उसके आरोप को और हवा देते हुए कहा था। नौकर ने किसी से सुन रखा था–कुलटा स्त्रियां पुरुष से दूना भोजन खा जाती हैं। नौकर ने यह सोचकर क्रोध में कहा–

"हे स्वामी! जहां पुरुष से दूना भोजन खाने वाली स्त्री है वहां मैं नही टिक सकता। ये तो थोडी–थोडी देर में मुख सूंघकर यह देखती हैं कि कुछ खा तो नहीं लिया।"

खैर–उस दिन तो उनकी बात बन गई। बनिया दोनों को कुछ न कहकर अपने काम–काज में लग गया, परन्तु कुछ ही दिनों बाद रत्नप्रभा और नौकर में इतनी घनिष्ट मित्रता बढ़ गयी कि वह दिन आ गया जब वे दोनों घर छोडकर भाग गये।

बनिया उन्हें देखता ही रह गया–यदि वह पहली बार ही उन दोनों की करामात देखकर उन्हें सजा दे देता तो आज उसे यह दिन देखने को न मिलता, परन्तु वह भी कुलटा स्त्री के फंदे में फंस गया था–उसने अपनी पत्नी को बचाने का कोई उपाय न सोचा था। किसी ने कहा है–

विपत्ति के आ जाने पर जो उपाय करता है, वही व्यक्ति बुद्धिमान होता है। बनिए ने अपनी विपत्ति का निवारण करता है, वही व्यक्ति बुद्धिमान होता है। बनिए ने अपनी विपत्ति का निवारण यदि शुरु में ही कर लिया होता तो आज अपनी पत्नी के चले जाने पर न रोता।

कथा सुनाकर प्रत्युत्पन्नमति बोली, "इसलिए मैं कहती हूं जो आपत्ति के आ जाने पर उपाय करता है वह बुद्धिमान है।"

यद्भविष्य ने कहा, "जो होनहार नहीं है वह कभी नहीं होगा और जो होनहार है वह कभी नहीं टलेगा। जो समझ जाते हैं, उन्हें चिन्ता नहीं होती है और चिन्ता उन्ही को होती है जो नासमझ होते हैं।"

अगले दिन मछेरे सरोवर पर आ पहुंचे और मछलियां पकड़ने लगे। इसी प्रयास में उन्होंने जाल डाल दिया।

प्रत्युपन्नमति और यद्भविष्य क्योंकि अभी तक सरोवर में ही थीं, इसलिए वे जाल में फंस गयीं।

प्रत्युत्पन्नमति समझती थी कि मछेरे जब आयेंगे और अपना जाल सरोवर में डालेंगे तो हम दोनों का उनके जाल में फंसना निश्चित है। ऐसा ही हुआ था–परन्तु प्रत्युत्पन्नमति यद्भविष्य से अधिक होशियार थी, वह जाल में फंस जाने के बाद मुर्दे की भांति हो गयी।

उसकी युक्ति काम आ गयी थी। मछेरों ने ऐसा ही किया था जो उसने सोचा था–हुआ यूं, मछेरों ने प्रत्युत्पन्नमति को मृत जानकर जैसे ही जाल से बाहर निकाला वह उछलकर तुरन्त सरोवर में गहरे पानी में जाकर समा गयी।

यद्भविष्य को मछेरों ने पकड़ते ही मार दिया।

कछुए ने कथा सुनाकर कहा, "इसलिए मैं कहता हूं कि भविष्य की चिन्ता समय रहते कर लेनी चाहिए। कोई ऐसा उपाय करो कि मैं दूसरे तालाब में पहुंच जाऊं।"

दोनों हंस बोलें, "दूसरे सरोवर में पहुंचने पर बच तो सकते हो पर रास्ते में तुम कैसे बच सकोगें?"

रास्ते का उल्लेख सुनकर कछुए के होश उड़ गये। वह सोचने लगा कि जब मैं अपनी जान कैसे बचा सकता हूं। यदि मैं इस सरोवर में ही रह गया तो अवश्य ही मछेरे आयेंगे और मैं उनके जाल में फंस जाऊंगा और मारा जाऊंगा।

यही सोचकर कछुए ने सुझाव रखा–"कुछ ऐसा उपाय करो जिससे मैं आकाश मार्ग से होकर जाऊं।"

"यह कैसे सम्भव है?" हंस उत्सुकतापूर्वक बोले।

कछुआ बोला, "तुम दोनों एक लकड़ी के टुकड़े को चोंच से पकड़ लेना और मैं, उस लकडी को मुंह से पकडकर लटक जाऊंगा। तुम दोनों उड़कर दूसरे सरोवर पर पहुंच जाना। इस तरह हम सभी आकाश मार्ग से दूसरे सरोवर में पहुंच जायेंगे।"

हंस बोले–"यह उपाय तो हो सकता है, किन्तु विद्वान को उपाय के साथ–साथ विपत्ति या उपाय के दुष्परिणाम का भी विचार कर लेना चाहिए। नहीं तो मूर्ख बगुले की तरह पछताना पडेगा।" "वह कैसे.....?" कछुआ बोला।

"सुनो हम सुनाते है.....।"हंस बोले।

❋❋❋

शेष पेज 10 **से आगे**.....

भगवान में भक्ति होती है, जिसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है, जो कि प्राणी मात्र के जीवन का एक मात्र ध्येय होता है।

वस्तु उसके जीवन की प्रगति में सहायक और उन्नति में सहायक हो, बाधक न हो, तो स्वीकार करता है, और उसका उपयोग करता है।मनुष्य की दृष्टि क्षणिक उपभोग सुख पर जो अत्यन्त ही छुद्र एवं तुच्छ है, कभी मुग्ध नहीं होती, यदि होती है तो अभी उसका पशुत्व प्रवृत्ति निवृत नहीं है। और उसमें तथा पशु में कोई अन्तर नहीं रहता है। महापुराण एवं संतो हितोपदेशानुसार, पूर्वजन्म के संस्कार और वर्तमान जन्म के अभ्यास एवं कुसंग से जब मनुष्य की दृष्टि तमछन्न रहती है। तब उसका पशुत्व काम करता है और वह बुद्धि का प्रयोग न करके मन एवं इन्द्रीयों को प्रिय लगने वाले विषय भोग के पीछे भटकता ही रहता है, यह पशुत्व है जिसे नष्ट करके मनुष्यत्व को जाग्रत होना पड़ेगा।

यह मनुष्य का जागरण, सहसा भी सम्पन्न हो सकता है और कम विकास से भी सम्भव है। पशुत्व की निवृत्ति एवं मनुष्यत्व के जागरण के लिये ऐसे निर्दिष्ठ पथ की आवश्यकता है जो मन को प्रिय लगने वाले विषयभोग की परिधि में न रहकर सीमिन न हो, बल्कि प्रच्युत ज्ञान के विश्वव्यापी आलोक से देवीव्यमान हो, और जिसमें पद–पद पर दिव्यमान की झांकी, एक उसकी ओर अग्रसर होने से प्रत्यक्ष निर्देशन प्राप्त होते है।

❋❋❋

शेष पेज 06 से आगे.....

ऊँ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

इस मंत्र जाप से अकाल मृत्यु, रोग, बाधा मानसिक चिंता, अवसाद निश्चित रूप से दूर हो सकते है।

शिव आराधना के लाभ

1. शिवपुराण के अनुसार शिव की आराधना करने से जीवन में सुख शांति–समृद्धि प्राप्त कर सकते है।

2. शिव साधना से मनुष्य को प्रत्येक क्षेत्र में सफलता व विजय प्राप्त होती है।

3. वैधनाथ भगवान शिव का स्वरूप है। अतः पूजन ध्यान करने से असाध्य से असाध्य रोग दूर होता है।

4. शिव शक्ति पुंज है, दिव्य है अतः पूजा अर्चना करने से शरीर में अद्भुत ऊर्जा बल की अनुभुति होती है।

5. भगवान शिव महामृत्युंजय है, इनकी अराधना से अकाल मृत्यु का भय समाप्त होता है।

6. शिव पूर्ण आदर्श गृहस्थ स्वरूप है। इनकी आराधना से गृहस्थ जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है।

7. महादेव कुबेर के अधिपति है, इनकी आराधना से लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

8. शिवकृपा से संतान सुख व पुत्र सुख की कामना पूर्ण होती है।

9. शत्रु का नाश/छुटकारा पाने के लिये शिव की भक्ति श्रेष्ठकर है।

10. शिव भक्ति से कुंडली में उत्पन्न दोषों का निदान होता है तथा ग्रहों की शांति होती है।

11. शिव साधना मोक्षदायिनि व भाग्यविधाता है।

भगवान शिव सम्पूर्ण स्वरूप है। शिवरात्रि ही एकमात्र ऐसा पर्व है जब भगवान भोलेनाथ अपने भक्तों का उद्वार करते है– आइये इस महाशिवरात्रि पर शिव साधना करें और अपने मन की इच्छाओं को पूर्णता प्रदान करें।

❋❋❋

शेष पेज 11 से आगे.....

मन को शान्ति मिलती है, बुद्धि का विकास होता है।

चरण स्पर्श में बांये हाथ से बांये पैर दाहिने हाथ से दाहिने पैर का एक साथ स्पर्श करना चाहिए। एक हाथ से चरण स्पर्श करना शास्त्रों में निषेध है। चरण स्पर्श करने से मनुष्य का अहंकार समाप्त होता है तथा समर्पण, विनम्रता व पूज्यता का भाव उदय होता है। चरण स्पर्श करना एक शिष्टाचार ही नहीं है, अपितु यह एक चिकित्सा विज्ञान है– जो स्वस्थ शरीर की सरचना में सहायक होता है।

झुककर चरण स्पर्श–करने से कमर और रीढ की हड्डी को आराम मिलता है। झुकने से सिर में रक्त प्रवाह बढ जाता है, जो नेत्रों के लिए लाभकारी होता है। **घुटनों के बल बैठकर** चरण स्पर्श करने में शरीर के सारे जोड़ों को मोडा जाता है, जिससे उनमें होने वाले दर्द से राहत मिलती है। **साष्टांग चरण स्पर्श करने** से शरीर के सारे जोड थोडी देर के लिए तन जाते हैं और तनाव दूर हेाता है। यह चरण स्पर्श की श्रेष्ठतम पद्धति है, जिसमें पेट के बल भूमि पर दोनों हाथ आगे फैलाकर लेटे हुए सम्मानीय व्यक्ति व देव प्रतिमा का चरण स्पर्श किया जाता है।

अभिवादन में चरण स्पर्श करना मात्र लौकिक व्यवहार ही नहीं है–यह व्यक्ति के दैहिकख् दैविक तथा भौतिक तापों को नष्ट करने में समर्थ है। बड़ों के चरण स्पर्श को अपना स्वभाव बनाए–इसे अपनी आदत में शामिल करें। अपने बच्चों में भी ऐसे ही संस्कार के बीज का रोपड़ करें। यदि आप अपने बुजुर्गो के प्रतिदिन चरण स्पर्श करते हो, तो आपके बच्चे भी आपका अनुसरण अवश्य करेंगे। अभिवादन की इस संस्कृति को जीवन्त बनाए रखना हम सभी का दायित्व है।

खुद वो बदलाव बनिए, जो आप समाज में देखना चाहते है।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

शेष पेज 05 से आगे.....

आप पर ही गुस्सा आता है और अपने ऊपर से बहुत जल्दी विश्वास खो देते हैं। दर असल यह बुद्धिप्रधान लोग होते है और ऐसे व्यक्ति बेकार की मेहनत नहीं करते। किसी भी कार्य को तर्क संगत और योजनावद्ध तरीके से करते हैं। ऐसे जातकों का समझाने का तरीका बहुत प्रभावशाली होता है। यह अपनी गलत बात को तर्कपूण तरीके से सही साबित करते हैं उनके स्वभाव में स्त्री स्वभाव की झलक दिखती है। किसी कार्य को कब करना चाहिए इसे यह जातक जानता है।

यह कभी दूसरों से काम लेने में हिचकते नहीं हैं। वह साहसी नहीं होते लेकिन धैर्यवान अवश्य होते हैं। इस लग्न का जातक झगड़ा पसंद नहीं करता। भीतर से यह बहुत डरपोक होते हैं। झगड़ा बढ़ने पर माफी माँग कर यह मामले को निवटा लेते हैं। इन्हें शुक्र अच्छा फल देता है। शुक्र भाग्य का स्वामी और कोष का स्वामी होता है। जातक की पत्नी सुंदर और गुणी होती है। शनि मिलाजुला फल देता है। इन्हें पेड़ पौधों को जल देना चाहिये। रत्नों में पन्ना धारण करना चाहिये। पन्ना धारण करने से आत्मबल मजबूत होता है।

विशेषताऐं

1. सलाह ऐसी ही देते हैं जिसमें उनका फायदा हों

2. साहस की कमी रहती है और झगड़ा नहीं करते हैं।

3. अपने विरोधियों को कूटनीति से बदला लेते हैं।

4. अस्थिर स्वभाव वाले होते है कन्या लग्न के व्यक्ति

❋❋❋

शेष पेज 09 से आगे.....

या केतु–राुह की दृष्टि हो या वह मंगल से युक्त हो तो संतान कभी न कभी भारी विपत्ति में फंस जाती है। उन्हें बुरे दिन देखने पड़ते हैं। उन पर लांछन, आरोप लगता है अथवा वाहन से भारी दुर्घटना की भी संभावना रहती है।यदि मेष, कर्क या वृश्चिक में से कोई एक लग्न हो, राहु भाग्य, कर्म या लाभ भाव में हो और केतु तृतीय, चतुर्थ या पंचम भाव में हो तो जातक के जीवन में सभी अरिष्टों का नाश होता है। वह सुखी, निरोगी तथा खुशहाल जीवन व्यतती करता है। शत्रु सदैव उससे पराजित होते हैं।किसी भी स्थान पर राहु–गुरु की युति, 'चांडाल योग' बनाती है। अतः जातक चांडाल, क्रोधी, पाखण्डी, धूर्त, परमुखापेक्षी, धर्म–कर्महीन और नास्तिक बन जाता है। वह धूर्त, धनहीन, संपत्तिहीन, कर्मच्युत, धोखेबाज तथा भागयहीन होता है। मानसिक रुप से तनावग्रस्त रहता है। शंकालु एवं अविश्वासी भी होता है।

यदि 1, 2, 3, 8 या 12वें भाव में भाग्येश के साथ राहु अथवा केतु हो तो जातक उत्पातकारक होता है अर्थात् जातक को बहुत कष्ट देने वाला होता है।अगर राहु अष्टम भाव में हो तथा राहु पर शनि, मंगल या सूर्य की दृष्टि हो तो विवाह में विघ्न आते हैं। विवाह देर से होता है। विवाहोपरान्त स्त्री या पुरुष दोनों में से किसी एक की मृत्यु शीघ्र होने की संभावना रहती है।लग्न में राहु–शनि की युति रोग कारक होती है। इसके अलावा चतुर्थ में माता के लिए, पंचम में संतान के लिये, सप्तम में स्त्री के लिये तथा नवम में पिता के लिये कष्टकारक होता है। यदि दशम में राहु–शनि की युति हो तो व्यापार या व्यवसाय द्वारा भारी हानि होती है।यदि राहु द्वितीय भाव में और मंगल सप्तम भाव में हो अर्थात् राहु–मंगल में षडाष्टक हो तो पति या पत्नी में से किसी एक की मृत्यु शीघ्र हो जाती है।

केतु के राग संबंधित कुछ योग– केतु ग्रह रोग का कारक है और पाठकों की जानकारी के लिये नीचे केतु से संबंधित कुछ योगों का वर्णन किया जा रहा है। जिनसे विभिन्न रोग उत्पन्न होते है–

–तृतीय भाव में मंगल या केतु के साथ शनि हो तो दाद, खाज–खुजली के रोग होते हैं।

–यदि केतु लग्न में स्थित हो और उन्हें पापग्रह देखें तो पिशाच, प्रेत पितर, भूत आदि की पीड़ा हो जाती है।केतु छठे भाव में स्थित हो तो दांतों में पीड़ा हो जाती है।

–सप्तम में मंगल एवं केतु हो तो फोड़े–फुन्सी, घाव होते हैं।

–यदि केतु और मंगल सप्तम स्थान में हो तो मनुष्य के शरीर में कहीं न कही घाव होता है।

–यदि षष्ठेश केतु देव से युक्त हो और छठे या आठवें भाव में हो तो पसलियों में रोग या चोट लगती है।

–कारकांश से चतुर्थ भाव में चंद्र हो और उस पर केतु देव की दृष्टि हो तो नीले रंग का कुष्ठ रोग होता है।

–रोगों को जन्म देने वाले ग्रहों में यदि केतु बलवान हो तो जातक को देह ताप, कुष्ठ रोग, असाध्य रोग, विष विकार प्रेत पीड़ा आदि हो जाते हैं। चंद्र, शुक्र और अष्टमेश के साथ केतु हो तो विषाक्त भोजन से उन्माद होता है।

–पंचम भाव में अशुभ स्थिति में केतु हो तो अकारण क्रोध निराशा, वैराग्य आदि रोग हो सकते हैं।

–लग्नेश, जन्म लग्न से जिस भाव में स्थित होकर केतु से युक्त हो उस भाव से संबंधित शरीर के अंग में सफेद दाग होता है।

–चन्द्र और मंगल, केतु के साथ हो तो सफेद दाग होता है।यदि षष्ठेश केतु के साथ हो तो सर्पदंश से मृत्यु हो सकती है।

–सप्तमेश से द्वितीय स्थान में केतु हो तो वाणी दोष होता है।

–राहु–केतु के केन्द्र–त्रिकोण में होने पर गले का रोग होता है।

–सप्तम स्थान में राहु–केतु उदर रोग होते हैं।कारकांश से पंचम में केतु हो तो संग्रहणी रोग होता है। कारकांश में केतु हो और उन पर बुध व शनि की दृष्टि हो तो जातक नपुंसक हो जाता है।केतु दशा में बुध अंतर हो तो ज्वर रोग होता है।लग्नेश–अष्टमेश, केतु के साथ हो तो जल, चोर, अग्नि आदि भय रहता है।

❋❋❋

शेष पेज 07 **से आगे**.....

ज्योतिर्निबन्ध में कहा है कि– प्रतिपदा, चतुर्दशी और भद्रा में जो होलिका को दिन में पूजित करता है वह एक वर्ष तक उस देश (राष्ट्र) को और नगर को आश्चर्य से दहन करता है।

प्रथम दिन प्रदोष के समय भद्रा हो और दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले पूर्णिमा समाप्त होती हो तो भद्रा के समाप्त होने की प्रतीक्षा करके सूर्योदय होने से पूर्व होली का दहन करना चाहिए। (चन्द्रप्रकाश)यदि पहले दिन प्रदोष न हो और हो तो भी रात्रि भर भद्रा रहे (सूर्योदय होने से पहले न उतरे) और दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले ही पूर्णिमा समाप्त होती हो तो ऐसे अवसर में पहले दिन भद्रा हो तो भी उसके पुच्छ में होलिका दीपन कर देना चाहिए। (भविष्योत्तर व लल्ल) ।यदि पहले दिन रात्रि भर भद्रा रहे और दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा का उत्तरार्ध मौजूद भी हो तो भी दिन भद्रा हो तब भी सूर्यास्त के पीछे होली जला देनी चाहिए। (मुहूर्त चिन्तामणि)

यदि दूसरे दिन प्रदोष के समय पूर्णिमा हो और भद्रा उससे पहले उतरने वाली हो, किन्तु चन्द्रग्रहण हो तो दहन करना चाहिए। (स्मृति कौस्तुभ)

यदि फाल्गुन दो हों (मलमास हो) तो शुद्ध मास (दूसरे फाल्गुन) की पूर्णिमा को होलिका दहन करना चाहिए। **(धर्मसार) हुताशनी मलमासे न भवति।**

होली पूजन विचार–होली का पूजनोत्सव रहस्यपूर्ण है। इसमें होली, ढुढा, प्रहलाद, तो मुख्य हैं हीं, इसके अलावा इस दिन **'नवान्नष्टि'** यज्ञ भी सम्पन्न होता है। इसी परम्परा से **'धर्मध्वज'** राजाओं के यहाँ माघी पूर्णिमा के प्रभाव में शूर, सामन्त और सभ्य मनुष्य गाजे–बाजे व लवाजमे सहित नगर से बाहर वन में जाकर शाखा सहित वृक्ष लाते हैं और उसको गन्ध अक्षतादि से पूजा कर नगर या गाँव से बाहर पश्चिम दिशा में आरोपित करके स्थित कर देते है। जनता में यह होली, होली दंड (होली का डांडा) या प्रहलाद के नाम से प्रसिद्ध होता है। यदि इसे **'नवान्नेष्टि'** का यज्ञस्तम्भ माना जाय तो निरर्थक नहीं होगा ।व्रती को चाहिए कि वह फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को प्रातः स्नानादि के अनन्तर **'मम बालक बाकादिभिः साह सुखशान्तिप्राप्त्यर्थ होलिका व्रतं करिष्ये।'** से संकल्प करके काष्ठखंग के खंग बनवाकर बालकों को देवे तथा उनको उत्साही सैनिक बनावे। वे निःशंक होकर खेलकूद करें और परस्पर हँसें। इसके अतिरिक्त होलिका के दहन स्थान को जल छिड़क कर शुद्ध करके उसमें सूखा काष्ठ, सूखे उपले और सूखे काँटे आदि का स्थापन करे। पुनः सायंकाल के समय प्रसन्न मन से सम्पूर्ण पुरवासियों एवं गाजे–बाजे के साथ होली के समीप जाकर शुभासन पर पूर्व या उत्तर मुख होकर बैठे और **'मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य पुरग्रामस्थजनपदसहितस्य वा सर्वापच्छान्ति प्रशमनपूर्वक सकल शुभफलप्राप्त्यर्थ ढुण्ढाप्रीतिकामनया होलिका पूजनं करिष्ये।'**–यह संकल्प करके पूर्णिमा प्राप्त होने पर अछूत या सूतिका के घर से बालकों द्वारा अग्नि मँगवाकर होली को दीप्तिमान् करे और चैतन्य होने पर गन्ध अक्षतपुष्पादि से शोडषोपचार पूजन करके **"असृक्पाभयसंत्रस्तैः कृत्वा त्वं होलि बालिशैः। अतस्त्वां पूजयिंष्यामि भूते भूतिप्रदा भव।।"** इस मन्त्र से तीन प्रदक्षिणा या प्रार्थना करके अर्घ्य दे तथा लोकप्रसिद्ध होलीदंड (प्रहलाद) या शास्त्रीय **'यज्ञस्तम्भ'** को शीतल जल से अभिषिक्त करके उसे एकान्त में रख दे। उपरान्त घर से लाए हुए खेड़ा, खांडा और वरकूलिया आदि को होली में डालकर जौ, गेहूँ की बाल और चने के होली को होली की ज्वाला से सेंके और यज्ञ सिद्ध नवान्न तथा होली की अग्नि तथा भस्म लेकर घर आवे। वहाँ आकर **वास स्थान** के प्रागंण में गोबर से चौका लगाकर अन्नादि का स्थापन कर उस अवसर पर काष्ठ के खंगो को स्पर्श करके बालकगण हास्य सहित शब्द उच्चारें। बालकों का रात्रि आने पर संरक्षण किया जावे और गुड़ के बने हुए पक्वान्न (पूआ–पूड़ी) उनको खाने को दे। इस प्रकार करने से ढुंढा के दोष शान्त हो जाते हैं और होली के उत्सव से अभूत पूर्व सुख शान्ति होती है।

❋❋❋

शेष पेज 11 **से आगे**.....

हो।

3. राहु का अशुभ भावों अशुभ लग्नानुसार ग्रहों या राशियों के ऊपर से गोचर संचारण हों।

4. राहु में केतु की या केतु में राहु की दशान्तर्दशा हो।

5. राहु से युति कारक या दृष्टि में आने वाले ग्रह की दशान्तर्दशा हों।

6. राहु की महादशा में सूर्य को अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर्दशा हो।

7. राहु की महादशा में चंद्र की अन्तर्दशा या प्रत्यन्तर्दशा हो।

8. जातक के जन्म से लेकर 48 वर्ष तक विशेष प्रभाव होता है।

9. गोचर कुण्डली में कालसर्प योग आ रहा हो या राहु केतु का जन्मस्थ राहु केतु राशि को गोचर द्वारा प्रभावित करना।

अतः पूजा विशेष लाभ लेने हेतु ''भविष्य दर्शन'' जाकर अपने स्थान को सुनिश्चित कर लें।

❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262